मरूमेघ
किसान ई पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाईन उपलब्ध

ISSN : 2456-2904
© marumegh 2022
आलेख प्राप्ति : 05-04-2022
स्वीकरण : 14-04-2022

गर्मियों में गहरी जुताई का महत्व एवं उपयोगिता

[1]राजीव परिहार व [2]ओम प्रकाश प्रजापत
[1]एम.एस.सी. शस्य विज्ञान एवं [2]पी.एच.डी. शस्य विज्ञान
सैम हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी और विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
*ई–मेलः– rparihar54@gmail.com

फसल की अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिए रबी की फसल की कटाई के तुरन्त बाद गहरी जुताई कर ग्रीष्म ऋतु में खेत को खाली रखना बहुत ही लाभदायक रहता है, ग्रीष्मकालीन जुताई रबी मौसम की फसलें कटने के बाद शुरू होती हैं जो बरसात शुरू होने पर समाप्त होती है। अर्थात् अप्रैल से जून माह तक ग्रीष्मकालीन जुताई की जाती है। जहां तक हो सके किसान भाईयों को गर्मी की जुताई रबी की फसल कटने के तुरन्त बाद मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई कर देनी चाहिए क्योंकि खेत की मिट्टी में नमी संरक्षित होने के कारण बैलों व ट्रैक्टर को कम मेहनत करनी पड़ती है।

कैसे करें गहरी जुताई –

- ✓ ग्रीष्मकाल में जुताई 15 सेमी गहराई तक किसी भी मिट्टी पलटने वाले हल से करना चाहिए।
- ✓ जुताई हमेशा खेत के ढलान के विपरीत दिशा में ढलान को काटते हुए करना चाहिए, जिससे वर्षा का पानी व मिट्टी न बह सके।
- ✓ मिट्टी के बड़े–बड़े ढेले रहना चाहिये, मिट्टी मुरमुरी न हो पाये, इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये।
- ✓ ज्यादा रेतीले इलाकों में गर्मी की जुताई नहीं करना चाहिए।
- ✓ गहरी जुताई के लिए एक विशेष यंत्र रेवल ट्रिपल मोल्ड प्लाऊ का उपयोग करके खेतों को गहरी जुताई का कार्य किया जा सकता है। किसानों के पास यह यंत्र नहीं है वो डिश प्लाऊ और मिट्टी पलटने वाले हल का उपयोग कर सकते हैं।

रबी फसलों की कटाई–गहाई के बाद अब फिर खरीफ फसलों की तैयारी का समय आ गया है। खरीफ फसलों की स्वस्थ व अच्छी फसल लेने के लिये खेत की गहरी जुताई का अपना महत्त्व है। इस कार्य के लिए यही उचित समय है। गहरी जुताई को रबी फसल कटाई के तत्काल बाद से लेकर मई के अंत तक कर सकते हैं। इस अवधि में जुताई करने पर 30–40 फीसदी तक फसलों की पैदावार बढ़ सकती है। यह कार्य सुबह व शाम के समय अपनी सुविधा के अनुसार कर सकते हैं। हर वर्ष गहरी जुताई की आवश्यकता नहीं होती, तीन वर्ष में एक बार गहरी जुताई अवश्य करना चाहिए।

गर्मी की जुताई के फायदे –

- ✓ मिट्टी का निचला हिस्सा ऊपर आ जाता है जिससे मिट्टी में मौजूद की पतंगें मृदा की ऊपर सतह पर आ जाते हैं, अप्रेल, मई, जून की तेज गर्मी एवं पक्षियों के द्वारा नष्ट कर दिये जाते हैं।
- ✓ गहरी जुताई से खेत की जलग्रहण क्षमता ज्यादा बढ़ जाती एवं खेत में नमी अधिक समय तक बनी रहती है। इस स्थिति में बीज का जमाव भी अधिक होता है।

- ✓ गहरी जुताई से खेत की मिट्टी में मौजूद कीट एवं खरपतवार नष्ट हो जाते हैं। साथ ही बहुवर्षीय खरपतवारों के कंद और राजोम्स (दूब, घास, मोथा, कांस आदि) धूप में मर जाते हैं।
- ✓ मृदा में उपस्थित पोषक तत्त्व फसल को पर्याप्त मात्रा में मिलने लगते हैं।
- ✓ नीचे की मिट्टी ऊपर एवं ऊपर की मिट्टी नीचे होने से मिट्टी में क्षारीय एवं अम्लीय गुण एक समान हो जाता है, जिसके फलस्वरूप मृदा उत्पादन क्षता बढ़ जाती है।
- ✓ मिट्टी नर्म होने से फसल की जड़ों का विकास अच्छा होता है, इस तरह से खेत की उत्पादन क्षमता बढ़ जाती है।
- ✓ फसल को दीमक एवं अन्य कीटों के नुकसान से बचाने में सहायक होगी।
- ✓ बिना कीटनाशक दवाओं का प्रयोग किए जाने से कीटों से छुटकारा पाने के लिए गर्मी की गहरी जुताई जरूरी है। पर्यावरण भी इससे दूषित नहीं होगा। मित्र कीट भी बच जाएंगे।
- ✓ जमीन के अंदर पाए जाने वाली विभिन्न प्रकार की फफूंदी भी अधिक ताप के कारण नष्ट हो जाएगी।
- ✓ गम्भी की जुताई से मृदा का कटाव भी कम होगा और मृदा के कणों के समुच्चय बन जाएंगी। रन्ध–कूप का आकार बढ़ जाएगा।
- ✓ गर्मी की जुताई से मिट्टी की सतह पर पड़े फसल अवशेष (पत्तियाँ, पौधों की जड़ें एवं खेत में उगे हुए खरपतवार आदि) नीचे दब जाते हैं जो सड़ने के बाद खेत की मिट्टी में बढोतरी करते हैं जिससे भूमि की उर्वरता स्तर एवं मृदा की भौतिक दशा व भूमि की संरचना अर्थात् मृदा स्वास्थ्य को ठीक करती है।

गहरी जुताई में सावधानियां:

- ✓ पूरे खेतों की एक समान जुताई करनी चाहिए तथा बिना जुताई वाला स्थान नहीं रहना चाहिए।
- ✓ फसल के अवशेष तथा अनावश्यक उगे पौधों को खेत में दबा देना चाहिए।
- ✓ गहरी जुताई के समय ध्यान रखें कि कम से कम मृत कूढ़ (नाली) खेत में बने, इसके निदान के लिए पलटीफार प्लाउ का उपयोग किया जा सकता है।
- ✓ गहरी जुताई के समय कई स्थानों पर मिट्टी एकत्र हो जाती हैं, उसके नीचे बिना जुता खेत रह जाता है, उसकी भी जुताई करनी चाहिए।
- ✓ पुरे खेत में भूमि के प्रकार के अनुसार एक समान गहरी जुताई करनी चाहिए।
- ✓ गहरी जुताई तीन वर्ष में एक बार अवश्य करें।

****